Original Article
ISSN (Online): 2582-7472

ShodhKosh: Journal of Visual and Performing Arts
June 2024 5(6), 2226–2229

# STUDY OF THE EFFECT OF TEACHER EFFICACY ON THE EDUCATIONAL ACHIEVEMENT AND EMOTIONAL DEVELOPMENT OF MIDDLE LEVEL STUDENTS

# मिडिल स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं भावनात्मक विकास पर शिक्षकों पर शिक्षक प्रभावोत्पादकता के प्रभाव का अध्ययन

Madhu Verma [1], Mahendra Prasad Pandey [2]

[1] Researcher, IFTM University
[2] Professor, Department of Education, IFTM University

**DOI**
10.29121/shodhkosh.v5.i6.2024.2983

**Funding:** This research received no specific grant from any funding agency in the public, commercial, or not-for-profit sectors.

**Copyright:** © 2024 The Author(s). This work is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.

With the license CC-BY, authors retain the copyright, allowing anyone to download, reuse, re-print, modify, distribute, and/or copy their contribution. The work must be properly attributed to its author.

## ABSTRACT

**English:** Students and education have a very deep relationship with each other. Education is more important than food for achievement. The present research paper is based on the study of the effect of teacher efficacy of teachers on the emotional development of middle level students. Where children are the center of school education, a teacher plays the most important role in ensuring knowledge acquisition in children. Education widely affects the socio-economic status of any society. Teacher-teaching process effectiveness, emotional development of teacher's emotional intelligence etc. affect.

**Hindi:** विद्यार्थी और शिक्षा का एक दूसरे से बड़ा ही गहरा सबंध है। शिक्षा अनुत्व के लिए खान-पान से अधिक आवश्यक है। प्रस्तुत शोध पत्र ''मिडिल स्तर के विद्यार्थियों के भावनात्मक विकास पर शिक्षकों की शिक्षक प्रभावोत्दकता के प्रभाव के अध्ययन पर किया गया है। जहाँ बालक विद्यालयी शिक्षा का केन्द्र होते हैं, बालकों में ज्ञानर्जन सुनिश्चित करने ''मैं सबसे महत्वपूर्ण भूमिका एक शिक्षक की होती है। किसी भी समाज के सामाजिक आर्थिक स्तर को शिक्षा व्यापक रूप से प्रभावित करती है। शिक्षक-शिक्षण प्रक्रिया प्रभावशीलता, शिक्षक की संवेगात्मक बुद्धि का भावनात्मक विकास आदि को प्रभावित करते हैं।

**Keywords:** Emotional Development, Emotional Intelligence, Teacher Effectiveness, भावनात्मक विकास, संवेगात्मक बुद्धि, शिक्षक प्रभावोत्दकता

## 1. प्रस्तावना

मनुष्य के अन्दर जन्म से ही कुछ शक्तियाँ विद्यमान होती हैं और अवसर मिलने पर इन शक्तियों का विकास होता है। यदि मनुष्य को अनुकूल अवसर और पर्याप्त सुविधाएँ नहीं मिलती हैं तो उनकी आन्तरिक शक्तियों का पूर्ण विकास नहीं हो पाता। इसलिए मनुष्यों का पूर्ण विकास तभी सम्भव है जब उसे विकास करने के लिए सभी सुविधाएं उपलब्ध हो और उन्हें स्वतंत्रता पूर्वक सीखने का अवसर भी मिले। बच्चों के जीवन के प्रारम्भिक वर्षो में उनके स्वास्थ्य एवं पूर्ण विकास के लिए बच्चों के माता-पिता ही उत्तरदायी होते हैं और अभिभावकों के आचरण तथा व्यक्तित्व का प्रभाव बच्चों के मानसिक एवं शारीरिक विकास पर अवश्य पड़ता है। इसलिए बच्चों को आदर्श नागरिक बनाने में स्कूल की अपेक्षा परिवार के लोगों का व्यवहार अधिक महत्वपूर्ण है। किन्तु वर्तमान समय में ऐसा प्रतीत होने लगा है कि साथ-साथ रहने के बावजूद समय के अभाव तथा जीवन में व्यस्तता अधिक होने के कारण माता-पिता अपने बच्चे का पूरा ध्यान नहीं रख पा रहे हैं।

समय के अभाव के साथ-साथ अधिकतर माता-पिता को ठीक से इस बात का ज्ञान भी नहीं है कि बालकों का उत्तम विकास किस प्रकार किया जा सकता है। इसलिए आज के समाज और बालकों की आवश्यकताओं को ध्यान रखते हुए बालकों को औपचारिक ढ़ंग से शिक्षण देने की आवश्यकता है और हमारे समाज में औपचारिक शिक्षण का उत्तरदायित्व विद्यालयों को सौंपा गया है। समस्त मानव जाति के विकास में शिक्षण की भूमिका अत्यन्त सराहनीय है। सभी जीवों में सीखने की प्रक्रिया स्वतः ही चलती रहती है। किन्तु मनुष्य को सीखने के लिए शिक्षण एवं प्रशिक्षण की आवश्यकता होती है और इस प्रक्रिया का प्रारम्भ माता से होता है। इसीलिए माता को बालक की प्रथम शिक्षिका कहा जाता है। बालक अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए माँ पर निर्भर होता है इसलिए सबसे पहले माँ से ही सीखना प्रारम्भ करता है तत्पश्चात् बालक परिवार के अन्य लोगो से सीखता है। समाज में शिक्षण कार्य के लिए विशेष लोगों की नियुक्ति की जाती है जिन्हें शिक्षक या अध्यापक कहा जाता है। इस प्रकार स्पष्ट होता है कि शिक्षा देने वाले या सिखाने वाले व्यक्ति को ही शिक्षक कहा जाता है। ''ज्ञान ही मस्तिष्क की खुराक है।''

**अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व :** मिडिल स्तर के बालक बाल्यावस्था तथा किशोरावस्था की बीच की कढ़ी है न तो बालक तब बालक होता न ही पूर्वतः किशोर होता है। इस अवस्था में विद्यार्थी विभिन्न प्रकार के 'संवेगों का अनुभव स्वयं में करता है। यदि इन संवेगो के उचित विकास हेतु 'शिक्षक द्वारा उन्हें उपयुक्त वातावरण मिले तो बालक के भावनात्मक विकास को सकारात्मक दिशा दी जा सकती है। इसके लिए विद्यालय में एक शिक्षक की -शिक्षण- प्रक्रिया प्रभावशाली होनी चाहिए क्योंकि हम सभी जानते है कि शिक्षण एक कला है। शिक्षक सदैव समाज में पूजनीय रहा है कही उसे शिक्षक कही गुरु कही अध्यापक कहा जाता है लेकिन सभी रूपों में कार्य एक ही होता है समाज का पथ प्रदर्शक के रूप में, मार्गदर्शक के रूप में तथा एक में आदर्श के रूप में इसी प्रकार बालक की शैक्षिक उपलब्धि के लिए एक सकारात्मक विद्यालय वातावरण महवपूर्ण है शैक्षिक उपलब्धि वो परिणाम है जो विद्यार्थियों को आगे कार्य करने के लिए प्रेरित एवं उत्साहित करता हैं।एक विद्यालय में एक शिक्षक की शिक्षण प्रकिया जितनी प्रभावी होगी उसी प्रकार वहाँ के बालको की शैक्षिक उपलब्धि, उनकी भावनात्मक ''विकास, मानसिक विकास आदि पर पड़ेगा।निम्न शोध अध्ययनों से पता चला है कि बालकों का स्कूल के का माहौल बालको के मानसिक स्वास्थ्य और सामाजिक -भावनात्मक विकास को सीधे प्रभावित करता है उसी प्रकार एक शिक्षक की संवेगात्मक बुद्धि उनकी शिक्षण-प्रक्रिया बालक के मानसिक विकास भावनात्मक विकास तथा उनकी शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करता है। एक शिक्षक की शिक्षण प्रभावशीलता कार्यक्रम अलग-अलग राज्यों में अलग-अलग होते हैं। आमतौर पर, एक शिक्षक प्रभावोदकता कार्यक्रम अवलोकन और अंाकलन के एक चक्र का वर्णन करता है जो एक शैक्षणिक वर्ष के दौरान शिक्षको के विभिन्न समूहों पर लागू होता है। नए शिक्षकों का मूल्यांकन अधिक बार किया जाता है और अनुभवी शिक्षको का मूल्यंाकन कुछ वर्षों के चक्रों में किया जाता है। हम पूर्व में यही धारणा मानते हुये आ रहे कि व्यक्ति की सफलताओ के पीछे उसकी मानसिक क्षमताओं और योग्यताओं का हाथ होता है और बालक की मानसिक योग्यता बालक के भावनात्मक विकास पर निर्भर होती है। मुख्यतः यही समझा जाता है कि व्यक्ति बालक की सफलता और उपलब्धि उसकी बुद्धि पर आधारित होती है जिनका भावात्मक विकास अच्छे से हुआ होता है उनकी बुद्धि भी अच्छी होती है तथा उनकी उपलब्धियां भी अधिक होती है। और यह सब मिडिल स्तर पर एक प्रभावी शिक्षक पर आधारित होता है। शिक्षक की संवेगात्मक बुद्धि उसकी मानसिक योग्यता उन सबको प्रभावित करती है।

**शोध समस्या कथन :** मिडिल स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं भावनात्मक विकास पर शिक्षको की संवेगात्मक बुद्धि तथा शिक्षक प्रभावोत्तकत के प्रभाव का अध्ययन

**शोध अध्ययन में प्रयुक्त शब्दों का परिभाषीकरण :**

**शैक्षिक उपलब्धि :** शैक्षिक उपलब्धि से तात्पर्य शिक्षण उद्देश्यों की प्राप्ति से है। छात्र शैक्षिक उद्देयों को प्राप्त करने में किस सीमा तक सफल हुए हैं, यही उनकी शैक्षिक उपलब्धि को दर्शाता है। विद्यार्थियों ने किस सीमा तक अपनी बौद्धिक योग्यता का विकास किया है, यही उनकी उपलब्धि का सूचक है। शैक्षिक उपलब्धि से तात्पर्य छात्रों द्वारा अर्जित ज्ञान, कौशल आदि योग्यता की मात्रा से है।

**सुपर (1967) :** के शब्दों में ''एक उपलब्धि या क्षमता परीक्षण यह ज्ञात करने के लिए प्रयोग किया जाता है कि व्यक्ति ने क्या और कितना सीखा तथा वह कोई कार्य कितनी भली-भाँति कर लेता है।''

**फ्रीमैन (1965) :** के विचार में ''उपलब्धि परीक्षण वह अभिकल्प है जो एक विषेष विषय या पाठ्यक्रम के विभिन्न विषयों में व्यक्ति के ज्ञान, समझ और कौषल का मापन करता है।''

**चार्ल्स ई. स्किनर के अनुसार :** शैक्षिक कार्य का अन्तिम परिणाम ही शैक्षिक उपलब्धि है, जो विद्यार्थियों को कार्य के 'बारे में अन्तिम जानकारी प्रदान करता है। शैक्षिक उपलब्धि विद्यार्थी द्वारा दिए गए अधिगम एवं प्रयोग में लाये गये ज्ञान को मापने का सर्वोत्तम साधान है। शैक्षिक उपलब्धि के आधार पर ही हम विद्यार्थियों के मध्य अन्तर कर सकते है कि यह बालक प्रतिभाशाली है या सामान्य है या पिछड़ा-बालक है। शैक्षिक उपलब्धि से आशय शिक्षा के क्षेत्र में प्राप्त परिणामों से होता है।

**भावनात्मक विकास :** शोध कार्य में भावनात्मक विकास से तात्पर्य मिडिल स्तर के विद्यार्थियों के भावनात्मक विकास है अर्थात् भावनात्मक विकास का सम्बन्ध भावनाओं के उभरने तथा उन्हें व्यक्त करने के समाज स्वीकृत तौर तरीकों को सीखने से है। जीवन में बौद्धिक विकास से ज्यादा जरूरी है भावनात्मक विकास। स्कूल का माहौल स्कूली जीवन की गुणवत्ता और चरित्र को दर्शाता है। एक सकारात्मक स्कूल माहौल लोगों को स्कूलों में सामाजिक, भावनात्मक और शारीरिक रूप से सुरक्षित महसूस करने में मदद करता है। अपनी और दूसरो की भावनाओ को पहचानने की क्षमता, अलग भावनाओं के बीच भेदभाव और उन्हें उचित रूप से लेबल करना, सोच और व्यवहार मार्गदर्शन करने के लिए भावनात्मक विकास आवश्यक है

बालक अपनी भावनात्मक समझ का उपयोग कर सामने वाले व्यक्ति से ज्यादा अच्छी तरह से संवाद कर सकता है और ज्यादा बेहतर परिणाम पा सकता है।

**शिक्षक प्रभावोत्पादकता:** जहाँ बालक विद्यालयी शिक्षा का केन्द्र होते हैं, बालको मे ज्ञानार्जन सुनिश्चित करने में सबसे महत्वपूर्ण भूमिका एक शिक्षक की होती है। यदि कोई शिक्षक अपने समय और संसाधनों का प्रभावी ढंग से उपयोग कर रहा है तो वे कक्षा में बेहतर प्रदर्शन करने की अधिक संभावना रखते हैं। यह बड़ी हुई उत्पादकता छात्रों के बेहतर सीखने में मदद करती है।प्रायः देखा गया है कि किसी विद्यालय में कोई शिक्षक बहुत ही लोकप्रिय होते हैं तो कोई शिक्षक उतना खास -प्रभावी नही होते है इसका सबसे बड़ा कारण है कि शिक्षक के शिक्षण के प्रभाव का परिणाम है। शिक्षक की  प्रभावशीलता का सीधा प्रभाव बच्चों की शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ता है।

**सोलते मैयर के अनुसार :** संवेगात्मक बुद्धि, संवेगों का प्रत्यक्षीकरण करने, उन्हें समझने, उसका प्रबन्धन करने एवं उन्हें प्रयोग में लाने की योग्यता है।‘‘

**शोध अध्ययन के उद्देश्य :**

1) छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि पर शिक्षकों की संवेगात्मक वुद्धि के प्रभाव का अध्ययन करना।

**शोध परिकल्पनाए :**

1) छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि पर शिक्षकों की संवेगात्मक वुद्धि पर सार्थक प्रभाव पड़ता है।

**शोध अध्ययन विधि :** प्रस्तुत शोध अध्ययन की प्रकृति को ध्यान में रखते हुए ”वर्णनात्मक अनुसंधान“ का एक प्रकार आदर्शमूलक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग करना उचित लगेगा इसलिए शोधकर्ती द्वारा सर्वेक्षण विधि का प्रयोग प्रस्तुत शोध अध्ययन में किया गया है।

**शोध अध्ययन की जनसंख्या :** प्रस्तुत शोध अध्ययन में मिडिल स्तर शिक्षा परिषद उ.प्र. द्वारा मान्यता प्राप्त तथा सरकार द्वारा वित्तीय सहायता प्राप्त मिडिल स्तर के विद्यालयों का अध्ययन किया गया। इस प्रस्तुत शोध अध्ययन जनपद मुरादावाद के सहायता प्राप्त मिडिल स्तर के विद्यालयों में अध्ययनरत कक्षा 8 के विद्यार्थियों का चयन न्यादर्श के रूप में किया गया है।

**शोध अध्ययन में प्रयुक्त उपकरण :** प्रस्तुत शोधकार्य में शोधकता ने उद्देश्यों के अनुरूप उपकरणों की खोज की, अतः शोधकर्ती ने शोध पर्यवेक्षक एवं शोध क्षेत्र के अन्य अनुभवी विद्वानों से सम्पर्क किया तथा उनके परामर्श से मानकिकृत उपकरण का प्रयोग किया है।

**अध्ययन का परिसीमांकन :** प्रस्तुत शोध अध्ययन केवल जनपद मुरादावाद तक ही सीमित है। शोध अध्ययन में केवल मिडिल स्तर पर अध्ययनरत् केवल कक्षा 8 के ही विधार्थियों का ही चयन किया गया है

**आंकडों का विश्लेषण एवं व्याख्या :** प्रस्तुत शोध अध्ययन कि निम्नलिखित सीमायें निर्धारित हैं।

**परिकल्पना परिक्षण.1** छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि पर शिक्षकों की संवेगात्मक वुद्धि पर सार्थक प्रभाव पड़ता है।

| तालिका संख्या .1छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि पर शिक्षकों की संवेगात्मक वुद्धि सम्वन्धी ज्ञान | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | लेवेन परिक्षण | | साधनों की समानता के लिए टी टेस्ट | | | | | | | |
| | | | | | | | | Sig. | | |
| | F | Sig. | F | Sig. | F | Sig. | F | नीचा करना | ऊपरी | |
| छात्र | 4.159 | .094 | 1.009 | 198 | .314 | .03994 | .03951 | -.03816 | .11805 | अस्वीकृत |
| छात्राऐं | | | 1.022 | 156.089 | .3010 | .03565 | .03409 | -.03455 | .11704 | |

तालिका संख्या . 1 के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि उच्च माध्यमिक स्तर पर विद्यालयों के विद्यार्थियों की भावनात्मक विकास के बीच महत्वपूर्ण अंतर है।

## 2. निष्कर्ष

छात्रों के शैक्षिक उपलब्धि का शिक्षकों की संवेगात्मक वुद्धि के लिए महत्वपूर्ण कारक है। संवेगात्मक वुद्धि के विभिन्न आयामों को विकसित करने के लिए उनके स्कूलों में नृत्य गायन नाटकिय जैसी विभिन्न प्रकार की सह पाठयचर्या गतिविधियाँ प्रदान की जानी चाहियें। शिक्षको को अच्छा वातावरण वनाना चाहिए और संवेगात्मक वुद्धि में सुधार के लिए विद्यार्थियों को उनके साथियों के साथ बेहतर वातचीत के अवसर प्रदान करने चाहिऐं।

## CONFLICT OF INTERESTS

None.


## ACKNOWLEDGMENTS

None.


## REFERENCES


अरोड़ा, रीता (2005);''शिक्षा में नव चिन्तन'', जयपुरः शिक्षा प्रकाशन।

अग्निहोत्री, रविन्द्र (2007);''आधुनिक भारतीय शिक्षा समस्याऐं एवं समाधान'', जयपुरः राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी।

भट्टाचार्य, जी0सी0 (2005);''अध्यापक शिक्षा'', आगराः विनोद पुस्तक मन्दिर।

दुबे, श्यामाचरण (2005);''भारतीय समाज'', दिल्लीः नेशनल बुक ट्रस्ट इण्डिया, पृष्ठ-126।

लाल एवं पलोड़ (2007);''शैक्षिक चिन्तन एवं प्रयोग'', मेरठः आर0लाल बुक डिपा।

प्रसाद, देवी (2001);''शिक्षा का वाहनः कला'', दिल्लीः नेशनल बुक ट्रस्ट इण्डिया, पृष्ठ-68,।

पाण्डेय, राम शुक्ल (2007);''शैक्षिक नियोजन एवं वित्त प्रबन्धन'', आगराः विनोद पुस्तक मन्दिर, पृष्ठ-105, 115, 116, 124।

शर्मा, रजनी एवं पाण्डेय, एस0पी0 (2005);''शिक्षा एवं भारतीय समाज'', तयपुरः शिक्षा प्रकाशन, पृष्ठ 128-129।

सुखिया, एस0पी0 (2005);''विद्यालय प्रशासन एवं संगठन'', मेरठः आर0लाल बुक डिपो।

अन्वेषिका, एन0सी0टी0ई0, नई दिल्ली।

''भारत की जनसंख्या'', उपकार प्रकाशन, आगरा-2.

भारतीय शिक्षा शोध पत्रिका, विद्या भारती, लखनऊ (उ0प्र0)

गिजुभाई बोधका -शिक्षक हों तो, पृ0 36

राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग, वार्षिक रिर्पोट नई दिल्ली- 1996-97

शिक्षा चिन्तन, त्रिमूर्ति संस्थान, कानपुर (उ0प्र0)

''उत्तर-प्रदेश एक अध्ययन (शिक्षा के सन्दर्भ में) साहित्य भवन पब्लिकेशन्स'', आगरा-3.